वह गुलाब जो सदैव देता रहता है

सिद्धयोगियों द्वारा बताए गए कृतज्ञता के उनके अनुभव

मुझे याद आ रहा है कि १ जनवरी, २०१९ को मधुर सरप्राइज़ में उस गुलाब ने गुरुमाई जी से क्या कहा था : "मैं एक गुलाब हूँ, और जैसा हूँ, अच्छा हूँ।" इसके कुछ ही समय बाद मुझे ध्यान में एक दूसरा ख़ूबसूरत गुलाब मिला। जब मैं वहाँ बैठा था, तब सूर्यास्त के रंग मेरे पूरे शरीर में छा गए; नीला, चमकीला बैंगनी, पीला मिश्रित गुलाबी, नारंगी और गुलाबी रंग। एक गहरा, लाल रंग मेरे हृदय में उतर गया और एक गुलाब बन गया जो अपरिमित रूप से खिला हुआ था। उसकी पँखुड़ियों के किनारों पर सूर्य का स्वर्णिम प्रकाश चमक रहा था। वह गुलाब जैसे-जैसे खिलता गया, ऐसा लग रहा था मानो वह ऊपर उठता जा रहा हो और पूरे कमरे में छा रहा हो। मुझे महसूस हुआ कि मैं पूरी तरह से संरक्षित हूँ, साथ ही मुझे प्रशान्ति का अनुभव हुआ।

गुरुमाई जी ने यह समझने में मेरी सहायता की है कि वे मुझसे तब से प्रेम करती हैं जब मैं इस संसार में आने वाला था; और यह कि वे सदैव मेरे साथ हैं, मेरी अपनी साँसों से भी क़रीब हैं।

जब भी मैं गुरुमाई जी की उपस्थिति का अनुभव करता हूँ तो हर बार विस्मय से भर जाता हूँ, जैसे ध्यान में, अपने पूजा-स्थान में लगी श्रीगुरुमाई की तस्वीर में, अथवा किसी व्यक्ति के प्रेमपूर्ण शब्दों में या फिर अपने सपनों में।

मैंने अपने परिवार तथा अपने समुदाय में श्रीगुरुमाई के आशीर्वादों को प्रवाहित होते देखा है।

गुरुमाई जी आपके दिव्य प्रेम के लिए आपको बारम्बार व कोटिशः धन्यवाद।

~कैनबेरा, ऑस्ट्रेलिया के एक सिद्धयोगी

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।